

ST. THOMAS SCHOOL, LONI

Classes I & II

Shloka Competition

Date: 4.10.19

D/P

Shloka chanting has been a part of our tradition from time immemorial. The immense peace experienced during the chanting is inexplicable. The vibration spread brings purity and serenity to the environment all around. So to experience the tranquility and the fragrance of the same, **Shloka Recitation Competition** is going to be held in our school for classes I and II.

Kindly make your ward learn one shloka from the following shlokas given below (13 Shlokas are attached for your reference). Best **5** students from each section will be selected on **18th October** and the same will be confirmed through a diary note. The children can come dressed in the appropriate attire according to their shloka.

Finals will be held on 21st October.

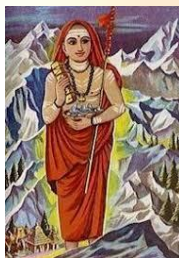
Judgement criteria - Fluency, Pronunciation, Presentation and Costume.

Introduction for Shloka Competition

मेरा नाम _____ है।

मैं कक्षा _____ में पढ़ता/पढ़ती हूँ।

मेरा श्लोक है _____





Shloka on Goddess Saraswati

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।

सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

भावार्थ : शरत्काल में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथों को देनेवाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ मेरे मुख में सदा निवास करें ।

Shloka on Lord Ganesha

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभः ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ॥

भावार्थ : हे हाथी के जैसे विशालकाय, जिसका तेज सूर्य की सहस्र किरणों के समान है । बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते हैं ।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदरगजाननम् ।

विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥

भावार्थ : जो एक दाँत से सुशोभित हैं, विशाल शरीरवाले हैं, लम्बोदर हैं, गजानन हैं तथा जो विघ्नों के विनाशकर्ता हैं, मैं उन दिव्य भगवान् हेरम्ब को प्रणाम करता हूँ ।

Shloka on Lord Shiva

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् ॥

भावार्थ : हम त्रि-नेत्रीय वास्तविकता का चिंतन करते हैं जो जीवन की मधुर परिपूर्णता को पोषित करता है और वृद्धि करता है। ककड़ी की तरह हम इसके तने से अलग ("मुक्त") हों, अमरत्व से नहीं बल्कि मृत्यु से हों ।

Shloka on Lord Krishna

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

भावार्थ : कंस और चाणूर का वध करने वाले, देवकी के आनन्दवर्द्धन, वसुदेवनन्दन जगद्गुरु श्रीकृष्ण चन्द्र की मैं वन्दना करता हूँ ।

Shloka on Guru

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः ।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते ॥

भावार्थ : धर्म को जानने वाले, धर्म मुताबिक आचरण करने वाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करने वाले गुरु कहे जाते हैं ।

Shloka on Goddess Durga

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

भावार्थ : हे नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याण दायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत वत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है।

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥

भावार्थ : नामों से प्रसिद्ध जगदम्बिके ! तुम्हें मेरा नमस्कार हो । देवी चामुण्डे ! तुम्हारी जय हो । सम्पूर्ण प्राणियों की पीड़ा हरने वाली देवी ! तुम्हारी जय हो । सब में व्याप्त रहने वाली देवी ! तुम्हारी जय हो । कालरात्रि ! तुम्हें नमस्कार हो ॥

Shloka of Ramayana

कर्मफल-यदाचरित कल्याणि ! शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।

तदेव लभते भद्रे! कर्त्ता कर्मजमात्मनः ॥

भावार्थ: मनुष्य जैसा भी अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है । कर्त्ता को अपने कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है ।

Gayatri Mantra

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

भावार्थ : ॐ के उच्चारण में ही तीनों शक्तियों का समावेश है । हे माँ भगवती , जिसने सभी शक्तियों का सर्जन किया ऐसी प्राणदायिनी, दुःख हरणी, सुख करणी, समस्त रोगों का निवारण करने वाली, प्रज्ञावान माँ भगवती जो सभी देवों की देवी हैं उसकी मैं उपासना करती हूँ ,जिसने मुझे संरक्षण दिया और सभी प्रकार के ज्ञान से समृद्ध बनाया ।

Shloka on Bhagavad Gita

छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत ॥

भावार्थ : इस श्लोक का अर्थ है: आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती है। न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है। (यहां भगवान श्रीकृष्ण ने आत्मा के अजर-अमर और शाश्वत होने की बात की है।)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

भावार्थ : इस श्लोक का अर्थ है: हे भारत (अर्जुन), जब-जब धर्म ग्लानि यानी उसका लोप होता है और अधर्म में वृद्धि होती है, तब-तब मैं (श्रीकृष्ण) धर्म के अभ्युत्थान के लिए स्वयम् की रचना करता हूँ अर्थात् अवतार लेता हूँ ।

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे ॥

भावार्थ :इस श्लोक का अर्थ है: सज्जन पुरुषों के कल्याण के लिए और दुष्कर्मियों के विनाश के लिए और धर्म की स्थापना के लिए ,मैं (श्रीकृष्ण) युगों-युगों से प्रत्येक युग में जन्म लेता आया हूँ ।